महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का स्वामी विवेकानन्द भवन के लोकार्पण समारोह में उद्बबोधन

स्थान:- उज्जैन, दिनांक :- 22 फरवरी, 2013, समय :- अपरान्ह 3-30 बजे

उज्जैन भारत के प्राचीनतम विद्या-केन्द्रों में अपना विशेष महत्व रखता है। भारतीय संस्कृति,परम्परा और सारस्वत साधना की दृष्टि से यह नगर इतिहास में प्रसिद्ध रहा है। मुझे इस पवित्र स्थान पर विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा नवनिर्मित स्वामी विवेकानन्द भवन के लोकार्पण समारोह में उपस्थित होने पर अत्यन्त प्रसन्नता है।

यह विश्वविद्यालय शैक्षिक गुणवत्ता, अकादमिक और अधोसंरचनागत विकास की दिशा में निरंतर अग्रसर है। यहाँ स्कूल ऑफ इंजीनिरिंग एंड टेक्नोलॉजी की हाल ही में स्थापना हुई है,जिससे विश्वविद्यालय मे उच्च प्रोद्योगिकी की दिश मे नई गतिशीलता आई है। यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि पाठ¬क्रम प्रारंभ करने के एक सत्र पश्चात ही इस भवन की सौगात विद्यार्थियों को मिल रही है। वर्तमान में स्वामी विवेकानन्द के साधशिती वर्ष चल रहा है। इस उपलक्ष्य में उनके नाम पर यह भवन तकनीकी शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए अवसर उपलब्ध करायेगा जो स्वामी जी के सपनों को साकार करने की दिशा में विश्वविद्यालय द्वारा की गई एक सार्थक पहल है। इस निमित्त मैं विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक साधुवाद एवं बधाई देता हूँ।

शिक्षा मानव को पूर्णता का रास्ता दिखाती है। हमारी वर्तमान शिक्षा जहाँ एक ओर पारम्परिक विधाओं की गम्भीरता से परिचय करा रही है, वहीं दूसरी ओर दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाते हुए आधुनिकतम विज्ञान एवं तकनीक के शिखरों को भी छू रही है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भारतीय प्रतिभाएँ विश्व में अपनी अग्रणी स्थान बना चुकी हैं। भारत विश्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महाशक्ति बनने की राह पर है। उच्च शिक्षा में अपनी प्रतिभा और मेहनत से नयी-नयी सफलताऐं पा रहे हमारे नौजवान विद्यार्थियों के लिए सम्भावनाओं का असीम आकाश खुला है।

आधुनिक भारत के निर्माताओं में स्वामी विवेकानन्द का स्थान गौरवपूर्ण है। वे देशभक्तों के शिरोमणि और युवा शक्ति के प्रेरणा पुंज हैं। भारत आज विकसित देशों की श्रेणी की ओर अग्रसर है। इसका मूल कारण हमारी आर्थिक विकास की संरचना सुदृढ़ है। हमारा देश विश्व के

अन्य देशों की तुलना में युवाओं की सर्वाधिक संख्या वाला देश है। इसीलिए स्वामी विवेकानन्द युवा शक्ति को जगाने का आह्वान करते हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी का मानना था कि सम्पूर्ण समाज का विकास तभी सम्भव है जब उस समाज में युवा शक्तिशाली हों, मानसिक रूप से भी और शारीरिक रूप से भी। देशवासियों को शांतमय, आनंदित सामंजस्य युक्त जीवन प्रदान करने के लिये युवाओं को स्वामी विवेकानन्द के संदेश को जन-जन तक पहुंचाना होगा। आत्मनिर्भर,आत्मविश्वास से परिपूर्ण,स्वस्थ युवा समाज के साथ-साथ का राष्ट्र का विकास यह आवश्यक है।

शिक्षा के क्षेत्र में हमारा अतीत सुनहरा था,वर्तमान प्रगति के सोपानों पर है और भवष्यि असीम सम्भावनाओं से भरा है।हमारे विद्यार्थी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी योग्यता को प्रमाणित करते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में आध्यत्मिक और नैतिक मूल्यों के लिये कोई स्थान नहीं रह गया है। ऐसे में जरूरत है कि हम स्वामी विवेकानन्द द्वारा दिखाये गये मार्ग पर विचार करें और अपनी विरासत से इस प्रकार के ऐतिहासिक तत्वों को ग्रहण करते हुए भारत को पुन: विश्व-गुरू के रूप में प्रतिष्ठित करें।

आज इस नवनिर्मित भवन के लोकापर्ण समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों, छात्रों एवं विद्यालय के मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ। साथ ही मैं यह आशा भी करता हूँ कि विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं अपने ज्ञान और कार्यकुशलता से महान भारत देश के यशस्वी नागरिक बनेंगे। मेरी शुभकामना है कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी जीवन में नैतिक मूल्यों को अंगीकार करते हुए अपने राष्ट्र के विकास में हरसम्भव योगदान अर्पित करेंगें।

जय हिन्द